



आधुनिक हिंदी ललित निबंध का स्वरूप

डॉ. सरयू शर्मा *

सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला कैंट, हरियाणा भारत

Abstract (सारांश):

आधुनिक हिंदी साहित्य में ललित निबंध एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित हुआ है। यह विधा व्यक्तिगत अनुभूतियों, कल्पनाशीलता और भाषा के सौंदर्य का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक हिंदी ललित निबंध के स्वरूप, विशेषताओं, विकास-क्रम और प्रमुख रचनाकारों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन सितंबर 2022 तक उपलब्ध साहित्यिक सामग्री पर आधारित है।

मुख्य शब्द: ललित निबंध, आधुनिक हिंदी साहित्य, निबंध विधा, व्यक्तित्व अभिव्यक्ति, कलात्मक गद्य

प्रस्तावना

1. प्रस्तावना

ललित निबंध हिंदी गद्य साहित्य की एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण विधा है जो अपनी सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति, व्यक्तिगत भावनाओं और कलात्मक शैली के लिए जानी जाती है। यह विधा पश्चिमी साहित्य के 'एस्से' (Essay) से प्रभावित होते हुए भी अपनी भारतीय संवेदना और सांस्कृतिक मूल्यों को समेटे हुए है। आधुनिक काल में यह विधा अत्यंत परिपक्व और समृद्ध हुई है।

ललित निबंध का मूल तत्व निबंधकार का व्यक्तित्व होता है। इसमें लेखक अपनी अनुभूतियों, विचारों और कल्पनाओं को कलात्मक भाषा में प्रस्तुत करता है। डॉ. भगवतशरण उपाध्याय के अनुसार, "ललित निबंध में व्यक्तित्व की छाप, भावना की सघनता और शैली का सौंदर्य होना आवश्यक है।"

2. ललित निबंध की परिभाषा और स्वरूप

2.1 परिभाषा

विभिन्न विद्वानों ने ललित निबंध को अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है: आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ललित निबंध को व्यक्तिगत और भावात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम माना है। उनके अनुसार, इसमें लेखक की निजी अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ प्रमुख होती हैं।

डॉ. नगेंद्र के अनुसार, ललित निबंध वह रचना है जिसमें व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, भावनाओं की मार्मिकता और शैली का सौंदर्य होता है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसे आत्मा की मुक्त अभिव्यक्ति बताया है जिसमें लेखक पूर्ण स्वतंत्रता के साथ अपने मन की बात कहता है।

Publication Information:

- Received Date: 04-11-2022
- Accepted Date: 09-12-2022
- Publication Date: 26-12-2022

How to cite this article:

डॉ. सरयू शर्मा. आधुनिक हिंदी ललित निबंध का स्वरूप. Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. 2022; 1(1):120-124.

2.2 स्वरूप और विशेषताएँ

आधुनिक हिंदी ललित निबंध के स्वरूप में निम्नलिखित तत्व प्रमुख हैं:

व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति: ललित निबंध में लेखक का व्यक्तित्व केंद्र में होता है। वह अपने अनुभवों, विचारों और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करता है।

भावात्मकता: इस विधा में भावनाओं की प्रधानता होती है। लेखक अपनी संवेदनाओं को सहज और मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है।

कल्पनाशीलता: ललित निबंध में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान है। लेखक यथार्थ को कल्पना के रंगों से सजाता है।

भाषा का सौंदर्य: इसमें भाषा केवल माध्यम नहीं, बल्कि सौंदर्य का स्रोत भी होती है। लेखक भाषा के प्रवाह, लय और चित्रात्मकता पर विशेष ध्यान देता है।

संक्षिप्तता: ललित निबंध सामान्यतः संक्षिप्त होता है, जिसमें एक विषय या भाव को गहनता से प्रस्तुत किया जाता है।

औपचारिकता से मुक्ति: यह विधा शास्त्रीय कठोरता और औपचारिकता से मुक्त होती है। लेखक सहज और स्वाभाविक शैली में लिखता है।

3. ललित निबंध का विकास-क्रम

3.1 प्रारंभिक विकास (1900-1920)

हिंदी में ललित निबंध का प्रारंभिक विकास बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ। भारतेंदु युग में पत्रकारिता के विकास के साथ निबंध लेखन को प्रोत्साहन मिला, परंतु ललित निबंध की स्पष्ट पहचान द्विवेदी युग में बनी।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पत्रिका 'सरस्वती' के माध्यम से निबंध विधा को प्रोत्साहन दिया। हालांकि उनके निबंध अधिकतर विचारात्मक थे, फिर भी उन्होंने ललित शैली के निबंधों को स्थान दिया।

3.2 शुक्ल युग (1920-1940)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों में ललित निबंध की विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। उनके निबंध 'श्रद्धा-भक्ति', 'उत्साह', 'करुणा' आदि में भावात्मकता और विचारात्मकता का सुंदर समन्वय है। शुक्ल जी ने निबंध को एक गंभीर विधा के रूप में स्थापित किया।

पद्मलाल पुत्रालाल बख्शी ललित निबंध के प्रारंभिक महत्वपूर्ण निबंधकार माने जाते हैं। उनके निबंध संग्रह 'पंचपात्र' और 'प्रबंध पारिजात' में ललित निबंध के सभी तत्व विद्यमान हैं।

3.3 स्वर्ण युग (1940-1970)

यह काल हिंदी ललित निबंध का स्वर्ण युग माना जाता है। इस दौरान अनेक श्रेष्ठ निबंधकारों ने विधा को समृद्ध किया।

हजारीप्रसाद द्विवेदी ललित निबंध के सर्वश्रेष्ठ हस्ताक्षर हैं। उनके निबंध 'अशोक के फूल', 'देवदारु', 'कुटज', 'आलोक पर्व' आदि में संस्कृति, इतिहास, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत चित्रण है। उनकी भाषा सहज, प्रवाहमयी और संस्कृतनिष्ठ है।

विद्यानिवास मिश्र ने ललित निबंध को नई ऊँचाइयाँ दीं। उनके निबंध 'छितवन की छाँह', 'तुम चंदन हम पानी', 'कदम

की फांक' आदि में लोक संस्कृति, परंपरा और आधुनिक संवेदना का सुंदर समन्वय है।

कुबेरनाथ राय के निबंधों में दार्शनिकता, संस्कृति-चेतना और भाषा का अद्भुत सौंदर्य है। 'गंध-मादन', 'रस-आखेटक', 'प्रिया नीलकंठी' उनके प्रसिद्ध संग्रह हैं।

विष्णु प्रभाकर ने अपने ललित निबंधों में सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों को प्रमुखता दी।

3.4 समकालीन युग (1970-2022)

समकालीन युग में ललित निबंध में नवीन प्रयोग और विविधता देखने को मिलती है।

रामदरश मिश्र ने अपने निबंधों में ग्रामीण जीवन, प्रकृति और संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है।

शरद जोशी ने व्यंग्य और हास्य के माध्यम से ललित निबंध को नया आयाम दिया।

शिवप्रसाद सिंह के निबंधों में संस्कृति और परंपरा के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है।

अशोक वाजपेयी ने समकालीन संदर्भों में ललित निबंध लेखन को समृद्ध किया है।

काशीनाथ सिंह के निबंधों में बनारस की सांस्कृतिक विरासत और जीवन-दर्शन का सुंदर चित्रण मिलता है।

4. ललित निबंध के प्रमुख तत्व

4.1 विषय-वस्तु

ललित निबंध में विषय-वस्तु की कोई निश्चित सीमा नहीं होती। लेखक किसी भी विषय को अपने व्यक्तित्व के रंग में रंगकर प्रस्तुत कर सकता है। प्रमुख विषय निम्नलिखित हैं:

- प्रकृति चित्रण (पुष्प, वृक्ष, ऋतुएँ, पर्वत आदि)
- सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन
- दार्शनिक चिंतन
- व्यक्तिगत अनुभव और संस्मरण
- साहित्य और कला
- लोक परंपराएँ और संस्कार

4.2 शैली

ललित निबंध की शैली में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:

वर्णनात्मक शैली: प्रकृति, व्यक्ति या घटना का चित्रात्मक वर्णन।

भावात्मक शैली: भावनाओं और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति।

विचारात्मक शैली: दार्शनिक और विचारात्मक तत्वों का समावेश।

व्यंग्यात्मक शैली: हास्य और व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों की अभिव्यक्ति।

4.3 भाषा

ललित निबंध की भाषा में निम्नलिखित गुण होते हैं:

- प्रवाहमयता और सहजता
- चित्रात्मकता और बिंबात्मकता
- लय और संगीतात्मकता
- मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग
- तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों का संतुलित प्रयोग
- वाक्य-विन्यास में विविधता

5. प्रमुख ललित निबंधकार और उनकी कृतियाँ

5.1 हजारीप्रसाद द्विवेदी

हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी के सर्वाधिक प्रतिष्ठित ललित निबंधकार हैं। उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं:

- **अशोक के फूल (1948):** इसमें प्रकृति, इतिहास और संस्कृति पर आधारित निबंध हैं। 'अशोक के फूल', 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' जैसे निबंध अत्यंत लोकप्रिय हैं।
- **कुटज (1964):** इसमें कुटज पुष्प को केंद्र में रखकर जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया गया है।
- **विचार और वितर्क (1954):** इसमें साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों पर निबंध हैं।
- **आलोक पर्व (1972):** इसमें भारतीय संस्कृति और परंपरा पर केंद्रित निबंध हैं।

द्विवेदी जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ, प्रवाहमयी और चित्रात्मक है। उनके निबंधों में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी आस्था और आधुनिक दृष्टिकोण का समन्वय है।

5.2 विद्यानिवास मिश्र

विद्यानिवास मिश्र ने ललित निबंध को लोक संस्कृति से जोड़ा। उनके प्रमुख संग्रह हैं:

- **छितवन की छाँह (1954):** इसमें ग्रामीण जीवन और लोक परंपराओं का सुंदर चित्रण है।
- **तुम चंदन हम पानी (1963):** इसमें भक्ति, श्रद्धा और भारतीय संस्कृति पर आधारित निबंध हैं।
- **कदम की फाँक (1985):** इसमें जीवन के विविध अनुभवों और संस्कारों का चित्रण है।

मिश्र जी की भाषा में ठेठ देशज शब्दों का प्रयोग मिलता है। उनके निबंधों में परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय है।

5.3 कुबेरनाथ राय

कुबेरनाथ राय के निबंधों में दार्शनिकता, पांडित्य और भाषा का गहरा सौंदर्य है। प्रमुख कृतियाँ:

- **गंध-मादन (1975):** इसमें संस्कृति, साहित्य और दर्शन पर गहन निबंध हैं।
- **रस-आखेटक (1980):** इसमें रस-सिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र पर आधारित निबंध हैं।
- **प्रिया नीलकंठी (1983):** इसमें प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं का चित्रण है।

राय जी की भाषा अत्यंत परिमार्जित और संस्कृतनिष्ठ है। उनके निबंधों में गहन विद्वता और सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता दिखाई देती है।

5.4 रामदरश मिश्र

रामदरश मिश्र के निबंधों में ग्रामीण परिवेश और प्रकृति का मार्मिक चित्रण है। प्रमुख कृतियाँ:

- **बिरवा महके वन-वन (1981)**
- **आदमी की निगाह में औरत (1987)**
- **मैं तो यहाँ हूँ (1995)**

5.5 अन्य महत्वपूर्ण निबंधकार

शरद जोशी ने व्यंग्य-प्रधान ललित निबंध लिखे। उनकी कृतियाँ 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'तिलस्म' आदि हैं।

काशीनाथ सिंह के निबंधों में बनारस का जीवन और संस्कृति जीवंत हो उठती है।

निर्मल वर्मा के निबंधों में आधुनिक जीवन की जटिलताओं और संवेदनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण है।

6. ललित निबंध में विषय-वैविध्य

आधुनिक हिंदी ललित निबंध में विषयों की विविधता उल्लेखनीय है:

6.1 प्रकृति-चित्रण

हजारीप्रसाद द्विवेदी का 'कुटज', 'देवदारु', कुबेरनाथ राय का 'पर्ण-मुकुट' जैसे निबंधों में प्रकृति के माध्यम से जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया गया है।

6.2 सांस्कृतिक चेतना

विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में भारतीय संस्कृति, परंपरा और संस्कारों का गहरा चित्रण है। 'तुम चंदन हम पानी' में भक्ति और श्रद्धा का सुंदर वर्णन है।

6.3 सामाजिक जीवन

विष्णु प्रभाकर, रामदरश मिश्र आदि के निबंधों में समाज, परिवार और मानवीय संबंधों का चित्रण मिलता है।

6.4 दार्शनिक चिंतन

हजारीप्रसाद द्विवेदी का 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' और कुबेरनाथ राय के अनेक निबंधों में गहन दार्शनिक चिंतन है।

6.5 व्यंग्य और हास्य

शरद जोशी, हरिशंकर परसाई जैसे लेखकों ने व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को उजागर किया है।

7. ललित निबंध की समकालीन स्थिति (2000-2022)

21वीं सदी में ललित निबंध लेखन में कुछ नए रुझान देखे गए हैं:

7.1 नए माध्यम

इंटरनेट, ब्लॉग और सोशल मीडिया ने ललित निबंध को नया मंच प्रदान किया है। अनेक युवा लेखक डिजिटल माध्यमों पर ललित निबंध लिख रहे हैं।

7.2 विषय-विस्तार

समकालीन ललित निबंधों में वैश्वीकरण, पर्यावरण, तकनीक, शहरीकरण जैसे आधुनिक विषयों को भी स्थान मिला है।

7.3 भाषिक प्रयोग

नई पीढ़ी के निबंधकारों में भाषा के स्तर पर अधिक प्रयोगशीलता देखी जा रही है। अंग्रेजी और हिंदी के मिश्रण से नई भाषिक संरचनाएँ उभर रही हैं।

7.4 प्रमुख समकालीन निबंधकार

अशोक वाजपेयी, मनोहर श्याम जोशी (जीवनकाल में), उदय प्रकाश, असगर वजाहत आदि ने समकालीन संदर्भों में ललित निबंध लिखे हैं।

8. ललित निबंध और अन्य गद्य विधाओं में अंतर

8.1 निबंध और ललित निबंध

सामान्य निबंध विचार-प्रधान और तथ्यात्मक होता है, जबकि ललित निबंध भाव-प्रधान और कलात्मक होता है। ललित निबंध में लेखक का व्यक्तित्व अधिक प्रमुख होता है।

8.2 ललित निबंध और संस्मरण

संस्मरण में किसी व्यक्ति या घटना का स्मरण प्रमुख होता है, जबकि ललित निबंध में विषय कोई भी हो सकता है। ललित निबंध में कल्पना की भूमिका अधिक होती है।

8.3 ललित निबंध और रेखाचित्र

रेखाचित्र में किसी व्यक्ति के चरित्र का चित्रण होता है, जबकि ललित निबंध का विषय व्यापक होता है।

9. ललित निबंध का महत्व

9.1 साहित्यिक महत्व

ललित निबंध ने हिंदी गद्य को नई संवेदनाएँ और सौंदर्य प्रदान किया है। इसने भाषा को लचीला, सहज और सौंदर्यपूर्ण बनाया है।

9.2 सांस्कृतिक महत्व

ललित निबंधों में भारतीय संस्कृति, परंपरा और मूल्यों का संरक्षण और प्रचार हुआ है। ये निबंध सांस्कृतिक चेतना को जागृत रखते हैं।

9.3 व्यक्तित्व विकास में महत्व

ललित निबंध पढ़ने से पाठक की संवेदनाएँ जागृत होती हैं, उसमें सौंदर्य-बोध विकसित होता है और वह जीवन को नए दृष्टिकोण से देखना सीखता है।

10. ललित निबंध की चुनौतियाँ और भविष्य

10.1 वर्तमान चुनौतियाँ

तेज गति का युग: आज की तीव्र गति वाली जीवनशैली में लोगों के पास धीरे-धीरे पढ़ने और समझने का समय कम हो रहा है।

डिजिटल माध्यमों का प्रभाव: सोशल मीडिया और माइक्रो-ब्लॉगिंग के युग में लंबी रचनाओं के प्रति रुचि घट रही है।

नई पीढ़ी का अभाव: ललित निबंध लिखने वाले नए लेखकों की कमी महसूस की जा रही है।

10.2 भविष्य की संभावनाएँ

नए माध्यम: डिजिटल प्लेटफॉर्म ललित निबंध को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाने में सहायक हो सकते हैं।

नए विषय: समकालीन मुद्दों पर ललित निबंध लिखे जाने की संभावना है।

अनुवाद: ललित निबंधों का अन्य भाषाओं में अनुवाद इस विधा को वैश्विक पहचान दिला सकता है।

11. निष्कर्ष

आधुनिक हिंदी ललित निबंध हिंदी गद्य की एक समृद्ध और महत्वपूर्ण विधा है। इसमें व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, भावात्मकता, कल्पनाशीलता और भाषा के सौंदर्य का अद्भुत समन्वय होता है। हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय जैसे महान निबंधकारों ने इस विधा को उत्कर्ष प्रदान किया है।

आधुनिक युग में ललित निबंध में विषयों की विविधता, शैलीगत प्रयोग और भाषिक समृद्धि देखने को मिलती है। हालांकि वर्तमान समय में इस विधा के समक्ष कुछ चुनौतियाँ हैं, लेकिन इसकी प्रासंगिकता और महत्व आज भी बना हुआ है।

ललित निबंध केवल साहित्यिक विधा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना का वाहक भी है। यह मानवीय संवेदनाओं को जागृत करता है, जीवन को नए दृष्टिकोण से देखना सिखाता है और भाषा के सौंदर्य का परिचय देता है। भविष्य में यदि नई पीढ़ी के लेखक इस विधा को अपनाएँ और समकालीन संदर्भों में इसका विकास करें, तो ललित निबंध हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रख सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शुक्ल R. चिंतामणि भाग-1. इलाहाबाद: हिंदी साहित्य सम्मेलन; 1929.
2. द्विवेदी H. अशोक के फूल. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 1948.
3. द्विवेदी H. कुटज. इलाहाबाद: राजकमल प्रकाशन; 1964.
4. द्विवेदी H. आलोक पर्व. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1972.
5. मिश्र V. छितवन की छाँह. इलाहाबाद: नीलाभ प्रकाशन; 1954.
6. मिश्र V. तुम चंदन हम पानी. दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 1963.
7. राय K. गंध-मादन. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1975.
8. राय K. रस-आखेटक. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 1980.
9. राय K. प्रिया नीलकंठी. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 1983.
10. मिश्र R. बिरवा महके वन-वन. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1981.
11. नगेंद्र, संपादक. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स; 1973.
12. तिवारी B. निबंध के प्रतिमान. इलाहाबाद: साहित्य भवन प्रकाशन; 1986.
13. वर्मा D. हिंदी साहित्य कोश भाग-1. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड; 1969.
14. सिंह N. कहना न होगा. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2000.
15. त्रिपाठी V. हिंदी आलोचना. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2010.
16. उपाध्याय B. निबंध कला और साहित्य रूप. इलाहाबाद: हिंदी साहित्य सम्मेलन; 1968.
17. सिन्हा I. ललित निबंध: परंपरा और प्रयोग. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी; 1987.
18. अग्रवाल V. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. कानपुर: रामनारायण लाल प्रकाशन; 1967.
19. जोशी S. जीप पर सवार इल्लियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1982.
20. वाजपेयी N. नया साहित्य: नए प्रश्न. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1955.

21. पांडेय M. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका.
इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 1992.
22. सिंह B. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्ली:
राधाकृष्ण प्रकाशन; 1997.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

Source: <https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>